रुद्राष्टकम | By Vijay Dadhich & Avinash Dadhich |

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निर्विकल्पं
निरिहं चिदाकाश रूपं भजेऽहम् ॥ 1 ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा–ज्ञान–गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसार पारीं नतोऽहम् ॥ 2 ॥

तुषाराद्रि–संकाश गौरं गभस्ति
निभं चन्द्रकोटि प्रभा श्रीं तनुं ।
मुनिः सर्वसिद्धः सुरैः वन्द्यमानं
गिरीशं भजे शंकरं शंकरोऽहम् ॥ 3 ॥

गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं
महाकाल कालं गणेशादि पालम् ।
जटाजूट विभूषितं नीलकण्ठं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ 4 ॥

कलातीत कल्पान्त कारं सुरारि
खड्ग पाश त्रिशूलानि धारं ।
मनोभूपहारीं मुनीन्द्रस्य हारीं
सदा भावयामि महेशं सुरेशम् ॥ 5 ॥

सुरेशं धनिशं महेशं गणेशं
त्रिनेत्रं च शूलं च दग्धारि–मेशम् ।
न भूतं न भविष्यं न विश्वं
तदेकं शिवं शंकरं शम्भुमीशम् ॥ 6 ॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥ 7 ॥

न जाने न जाने न जाने न भक्तिं
न भावं न योगं न धारां न तापम् ।
तव तत्त्वं शरण्योऽसि देवेश मह्यं
शिवे शंकरा शम्भु विश्वेश शुद्धम् ॥ 8 ॥

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b0%e0%a5%81%e0%a4%a6%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%b7%e0%a5%8d%e0%a4%9f%e0%a4%95%e0%a4%ae-by-vijay-dadhich-avinash-dadhich/